925 कर्तृकरणे कृता बहुलम् २।१।३२

यह विधि सूत्र है। इसका अर्थ है कि तृतीया विभक्ति से अन्त होनेवाले पद का 'कृत्' प्रत्ययों से अन्त होनेवाले पद के साथ बहुलता (विकल्प) से समास होता है।। यथा – हरित्रातः

लौ० वि० – हरिणा त्रातः, अ० वि० – हरि + टा + त्रात + सु। 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्' सूत्रानुसार कृत् से अन्त होनेवाले 'त्रात' पद का तृतीया विभक्त्यन्त हरिणा पद के साथ समास हुआ। 'कृत्तद्धित समासाश्च' से उसकी प्राति० संज्ञा हुई। 'सुपो धातु-प्रातिपदिकयोः' से 'टा' और 'सु' विभक्ति का लोप हुआ त्रात हरि, 'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से उसकी उपसर्जन संज्ञा हुई एवं 'उपसर्जनं पूर्वम्' से पूर्व रूप होकर हरित्रात बना। पुनः इसकी प्रातिपदिक संज्ञा होकर, 'स्वौजसमौट...' से 'सु' विभक्ति लगी, सु का उ एवं ससजुषो रुः से 'रु' होने तथा 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' से र का विसर्ग होकर हरित्रातः बना।

(b) नखभिन्नः – नखैः भिन्नः (लौकिक), नख + टा + भिन्न + सु (अ० वि०) – Same as हरित्रातः।

927 – चतुर्थी तदर्थार्थ – बलि – हित – सुख – रक्षितैः – २।१।३६ यह विधिसूत्र है। सूत्र का अर्थ है – चतुर्थी के अर्थवाले पद का, बलि, हित, सुख और रक्षा अर्थ में, इनपदों के साथ चतुर्थ्यन्त पद का तत्पुरुष समास होता है।

यथा – यूपदारुः – लौ० वि० – यूपाय दारुः अ० वि० – यूप + ङे + दारु + सु।

'चतुर्थी तदर्थार्थ बलि.....' सूत्रानुसार चतुर्थ्यन्त यूपाय पद का दारुः पद के साथ समास हुआ। 'कृत्तद्धित..'

से उसकी प्रातिपदिक संज्ञा, 'सुपो धातु...' से विभक्ति का लोप - शूपदारु, प्रथमा निर्दिष्ट समास उपसर्जनम् से उसकी उपसर्जन संज्ञा एवं 'उपसर्जनं पूर्वम्' से पूर्वनिपात हुआ। पुनः प्रातिपदिक संज्ञा एवं स्वादि कार्य होकर यूपदारुः रूप सिद्ध हुआ।

बलि - भूतबलिः - लौ० वि० - भूताय बलिः अ० वि० - भूत + ङे, बलि + सु।

हित - गोहितम् - लौ० वि० - गोभ्यः हितम्, अ० वि - गो + ङे, हित + सु।

सुख - गोसुखम् - लौ० वि० - गोभ्यः सुखम्, अ० वि० - गो + ङे, सुख + सु।

रक्षित - गोरक्षितम् - लौ०वि० गोभ्यः रक्षितम्, अ० वि० गो + ङे रक्षित + सु। All are Same as यूपदारुः।

928. पञ्चमी भयेन - 2|1|37 पञ्चमी से अन्त यह विधिसूत्र है। इसका अर्थ है पञ्चमी से अन्त होनेवाले सुबन्त का 'भय' पद के साथ समास होता है। यथा - चोरभयम् - लौ० वि० - चोराद् भयम् अ० वि० - चोर + ङसि, भय + सु।

'पञ्चमी भयेन' सूत्रानुसार पञ्चम्यन्त सुबन्त पद 'चोराद्' का 'भयम्' पद के साथ तत्पुरुष समास हुआ। 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से उसकी प्राति० संज्ञा, 'सुपो धातु...' से विभक्ति का लोप होकर 'चोरभय' बना। 'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से उसकी उपसर्जन संज्ञा हुई तथा 'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसका पूर्वनिपात। पुनः प्रातिपदिक संज्ञा हुई। 'स्वौजसमौट्...' से स्वादि कार्य हुआ एवं सु विभक्ति का 'अतोऽम्' से 'अमादेश' (अम् + आदेश) होकर पूर्वरूप चोर- 'चोरभयम्' सिद्ध हुआ।

Scanned with CamScanner